oliveboard

हिंदी भाषा सम्पूर्ण परिचय

भाग -१

(Complete Guide for Hindi Language Preparation)

For LIC Assistant Mains Exam

जीवन बीमा निगम के सहायकों की भर्ती हेतु ऑनलाइन परीक्षा में इस बार हिंदी और अंग्रेजी भाषा का विकल्प दिया गया है।

यदि भाषा के परीक्षा आधारित पैटर्न को देखें तो हिंदी भाषा के संभावित निर्देश कुछ इस प्रकार से है –

इस प्रश्नावली में हिंदी भाषा में प्रवीणता, शब्दभंडार, वाक्य रचना, शब्दप्रयोग, समानार्थक, विपरीतार्थी शब्द, अनेकार्थी शब्द, वर्तनी त्रुटी, लोकोक्ति, मुहावरे आदि से सम्बन्धी प्रश्न होंगे। साथ ही उनका स्वरूप कुछ इस प्रकार हो सकता है –

- **गद्यांश आधारित प्रश्न**
- **रिक्त स्थान**
- **वाक्य पुनर्व्यवस्थित करना**
- **दोषपूर्ण वाक्य ज्ञात करना**
- **वाक्य या गद्यांश में संदर्भ के आधार पर अनुचित शब्द ज्ञात करना**
- **शब्द प्रतिस्थापन**
- **वाक्य संक्षेपण**
- **गद्यांश संक्षेपण**
- **मुहावरे, लोकोक्ति , विपरीतार्थी, समानार्थी ये सब गद्यांश आधारित और स्वतंत्र तौर से भी हो सकते हैं**

इस प्रकार कुछ व्याकरण की गहन तकनीकी जानकारी की अपेक्षा यहाँ प्रतीत होती है| इस मार्गदर्शिका के अंतर्गत हम आपको हिंदी के सभी संभावित व्याकरणिक और परीक्षा में उपयोगी पक्षों का परिचय देंगे। यहाँ सैद्धांतिक पक्ष को जानने के बाद आप व्यावहारिक अभ्यास के लिए ओलिवबोर्ड के मॉक टेस्ट का अभ्यास जरूर करें।

हिंदी भाषा में प्रवीणता का अर्थ – हिंदी भाषा में प्रवीणता का अर्थ हुआ **दसवीं कक्षा तक के हिंदी** भाषा की मानक इकाइयों की समझ अर्थात भाषा के कुछ मूलभूत व्याकरणिक पक्ष का ज्ञान इसके लिए आपको हिंदी भाषा के व्याकरण के तत्वों से परिचित होना होगा।

हिंदी वर्णमाल(Alphabet) में में कुल 52 ध्वनियाँ हैं।

स्वर – अ(A) आ(AA) इ (I) ई (EE) उ (U) ऊ(OO) ऋ(RI) ए(AE) ऐ(AIE) ओ(O) औ(OU) आप देखिये अंग्रेजी में को पांच (vowels) स्वर हैं वही हिंदी के भी स्वर के उच्चारण हैं। इसका कारण है दोनों भाषाओँ का एक ही भाषा परिवार से होना।

- व्यंजन(Consonant) -
- क ख ग घ ड. इसे 'क' वर्ग कहते हैं।
- च छ ज झ ञ् इसे 'च' वर्ग कहते हैं।
- ट ठ ड ढ ण इसे 'ट' वर्ग कहते हैं।
- त थ द ध न इसे 'त' वर्ग कहते हैं।
- प फ ब भ म इसे 'प' वर्ग कहते हैं।
- य र ल व श ष स ह- ये अन्तस्थ: व्यंजन कहलाते हैं
- संयुक्त व्यंजन – क्ष त्र ज्ञ श्र
- आयोग वाह अं (अनुस्वर) अ: (विसर्ग)
- द्विगुण व्यंजन- ड़ ढ.
- इसके अतिरिक्त अंग्रेजी के प्रभाव से एक और ध्वनि के प्रयोग प्रचलन में है जिसे संकर ध्वनि कहा जा सकता है जिसका प्रयोग 'कॉफी' जैसे शब्दों को लिखने में करते हैं यह हिंदी के ओ और औ के बीच ऑ की ध्वनि है।

इन सभी ध्वनियों को पुनः उच्चारण के आधार पर और बोलने के प्रयत्न के आधार पर वर्गीकृत किया गया है, हालांकि उसका विस्तार फिर कभी किसी और संदर्भ में करना बेहतर होगा यहाँ वर्णमाला का परिचय इसलिए आवश्यक था ताकि आप हिंदी के सबसे लघुतम सार्थक इकाई से परिचित हो जाएँ।

यहाँ हमें शब्द पर ध्यान देना है हिंदी में शब्दों के मुख्यत: भेद इस प्रकार हैं

रूपान्तर के अनुसार

(क) विकारी शब्द- (१) संज्ञा (२) सर्वनाम (३) विशेषण (४) क्रिया

(ख) अविकारी/अव्यय शब्द – (१) क्रिया विशेषण (२) संबंध सूचक (३) समुच्चय बोधक

(४) विस्मयादि बोधक

रचना या बनावट के आधार पर (१) रूढ़ (२) यौगिक (३) योग रूढ़

उत्पत्ति/ इतिहास/ विकास के अनुसार शब्दों के चार भेद हैं

(1) तत्सम

(2) तद्भव

(3) देशज

(4) आगत (विदेशी)

वाक्य के प्रयोग के आधार पर शब्दों के आठ भेद हैं –

- संज्ञा – जिससे किसी वस्तु भाव और जीव के नाम का बोध हो उसे संज्ञा कहते हैं।
- सर्वनाम – संज्ञा के बदले आने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं।
- विशेषण – संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं।
- क्रिया – जिससे किसी काम का करना, होना समझा जाए, उसे क्रिया कहते हैं।
- क्रिया विशेषण- जिससे क्रिया, विशेषण अथवा अन्य क्रियाविशेषण की विशेषता प्रकट हो, उसे क्रियाविशेषण कहते हैं।
- समुच्चय बोधक – दो शब्दों या वाक्यों को मिलाने वाले शब्द समुच्चय बोधक कहलाते हैं।
- विस्मयादि बोधक- मनोविकार को सूचित करने वाले शब्द को विस्मयादि बोधक कहते हैं।

संज्ञा के रूपांतरण से ही हमें मुख्यत: लिंग, वचन और कारक के स्वरूप की जानकारी मिलती है।
लिंग- संज्ञा के जिस शब्द से स्त्री या पुरुष की जाति का बोध हो।
वचन – विकारी शब्दों के जिस रूप से संख्या का बोध हो।

कारक – संज्ञा (या सर्वनाम) के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ प्रतीत होता है, उस रूप को कारक कहते हैं।

हिंदी में लिंग के दो भेद हैं- पुल्लिंग और स्त्रीलिंग
हिंदी में वचन के दो भेद हैं – एक वचन और बहुवचन
हिंदी में कारक के आठ भेद हैं , जो निम्न है –

कारक	विभक्ति/परसर्ग
कर्ता कारक	ने
कर्म कारक	को
करण कारक	से
सम्प्रदान कारक	को, के लिए
अपादान कारक	से
सम्बन्ध कारक	का के की रा रे री
अधिकरण कारक	में, पर
संबोधन कारक	हे, अजी, अहो इत्यादि।

सर्वनाम में केवल सात कारक होते हैं इसमें संबोधन कारक नहीं होता।

वाक्य विचार(Syntax) की परिभाषा

शब्द का ऐसा सार्थक समूह जिससे पूरी बात समझ में आ जाये, 'वाक्य' कहलाता है।
जैसे – मैं परीक्षा की तैयारी के लिए ओलिवबोर्ड मॉक टेस्ट का अभ्यास करता हूँ।

वाक्य के भाग

वाक्य के दो भेद होते है-
(1)उद्देश्य (Subject)
(2)विधेय (Predicate)

(1)उद्देश्य (Subject):-वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाये उसे उद्देश्य कहते हैं।
जैसे- ओलिवबोर्ड विद्यार्थियों के लिए ई- बुक उपलब्ध कराता है।
इस वाक्य में ओलिवबोर्ड के बारे में बताया गया है। अतः ये उद्देश्य है। इसके अंतर्गत कर्ता और कर्ता का विस्तार आता है जैसे- 'परिश्रम करने वाला व्यक्ति' सदा सफल होता है। इस वाक्य में कर्ता (व्यक्ति) का विस्तार 'परिश्रम करने वाला' है।

उद्देश्य के भाग-

उद्देश्य के दो भाग होते है-
(i) कर्ता
(ii) कर्ता का विशेषण या कर्ता से संबंधित शब्द।

(2)विधेय (Predicate):- उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे **विधेय** कहते है।
जैसे- तुम किताब पढ़ते हो।
इस वाक्य में 'किताब पढ़ते हो' विधेय है क्योंकि 'तुम' (उद्देश्य) के विषय में कहा गया है।

दूसरे शब्दों में- वाक्य के कर्ता (उद्देश्य) को अलग करने के बाद वाक्य में जो कुछ भी शेष रह जाता है, वह विधेय कहलाता है।
इसके अंतर्गत विधेय का विस्तार आता है। जैसे- लंबे-लंबे बालों वाली लड़की 'अभी-अभी एक बच्चे के साथ दौड़ते हुए उधर गई' ।
इस वाक्य में विधेय (गई) का विस्तार 'अभी-अभी एक बच्चे के साथ दौड़ते हुए उधर' है।

विशेष-आज्ञासूचक वाक्यों में विधेय तो होता है किन्तु उद्देश्य छिपा होता है।
जैसे- वहाँ जाओ। खड़े हो जाओ।
इन दोनों वाक्यों में जिसके लिए आज्ञा दी गयी है वह उद्देश्य अर्थात 'वहाँ न जाने वाला '(तुम) और 'खड़े हो जाओ' (तुम या आप) अर्थात उद्देश्य दिखाई नही पड़ता है, वरन छिपा हुआ है।

विधेय के भाग-

विधेय के छः भाग होते है-

(i) क्रिया

(ii) क्रिया के विशेषण

(iii) कर्म

(iv) कर्म के विशेषण या कर्म से संबंधित शब्द

(v) पूरक

(vi)पूरक के विशेषण।

नीचे की तालिका से उद्देश्य तथा विधेय सरलता से समझा जा सकता है-

वाक्य	उद्देश्य	विधेय
विद्यार्थी मेहनत करता है	विद्यार्थी	मेहनत करता है।
परीक्षा में सफल होने के लिए मेहनत करना आवश्यक है।	परीक्षा	मेहनत करना आवश्यक है।

सफेद -कर्ता विशेषण

गाय -कर्ता[उद्देश्य]

हरी - विशेषण कर्म

घास -कर्म [विधेय]

खाती है- क्रिया[विधेय]

वाक्य के भेद

वाक्य के भेद- रचना के आधार पर

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते है-

(i) साधरण वाक्य या सरल वाक्य (Simple Sentence)

(ii) मिश्रित वाक्य (Complex Sentence)

(iii) संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)

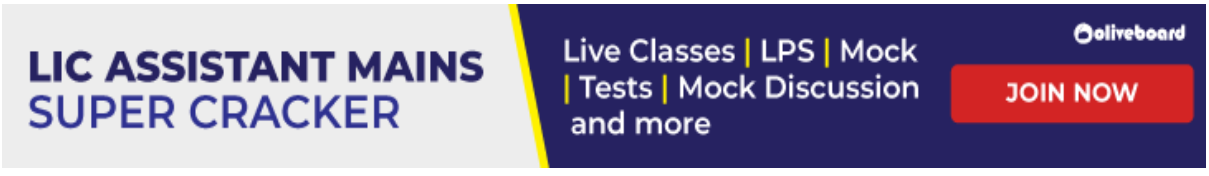

(i) साधरण वाक्य या सरल वाक्य:- जिस वाक्य में एक ही क्रिया होती है और एक कर्ता होता है, वे साधारण वाक्य कहलाते हैं।

इसमें एक 'उद्देश्य' और एक 'विधेय' रहते हैं। जैसे- 'बिजली चमकती है', 'पानी बरसा'।
इन वाक्यों में एक-एक उद्देश्य, अर्थात कर्ता और विधेय, अर्थात क्रिया है। अतः ये साधारण या सरल वाक्य हैं।

(ii) मिश्रित वाक्य:- जिस वाक्य में एक से अधिक वाक्य मिले हों किन्तु एक प्रधान उपवाक्य तथा शेष आश्रित उपवाक्य हो, मिश्रित वाक्य कहलाता है।

जब दो ऐसे वाक्य मिलें जिनमें एक मुख्य उपवाक्य (Principal Clause) तथा एक गौण अथवा आश्रित उपवाक्य (Subordinate Clause) हो, तब मिश्र वाक्य बनता है। जैसे-
मेरा दृढ़ विश्वास है कि भारत जीतेगा।
सफल वही होता है जो परिश्रम करता है।
उपर्युक्त वाक्यों में 'मेरा दृढ़ विश्वास है कि' तथा 'सफल वही होता है' मुख्य उपवाक्य हैं और 'भारत जीतेगा' तथा 'जो परिश्रम करता है' गौण उपवाक्य। इसलिए ये मिश्र वाक्य हैं।

(iii) संयुक्त वाक्य:- जिस वाक्य में दो या दो से अधिक उपवाक्य मिले हों, परन्तु सभी वाक्य प्रधान हो तो ऐसे वाक्य को संयुक्त वाक्य कहते हैं।

जैसे- वह सुबह गया और शाम को लौट आया। प्रिय बोलो पर असत्य नहीं। उसने बहुत परिश्रम किया किन्तु सफलता नहीं मिली।

संयुक्त वाक्य उस वाक्य-समूह को कहते हैं, जिसमें दो या दो से अधिक सरल वाक्य अथवा मिश्र वाक्य अव्ययों द्वारा संयुक्त हों। इस प्रकार के वाक्य लम्बे और आपस में उलझे होते हैं। जैसे- 'मैं रोटी खाकर लेटा कि पेट में दर्द होने लगा, और दर्द इतना बढ़ा कि तुरन्त डॉक्टर को बुलाना पड़ा।' इस लम्बे वाक्य में संयोजक 'और' है, जिसके द्वारा दो मिश्र वाक्यों को मिलाकर संयुक्त वाक्य बनाया गया।

इसी प्रकार 'मैं आया और वह गया' इस वाक्य में दो सरल वाक्यों को जोड़नेवाला संयोजक 'और' है। यहाँ यह याद रखने की बात है कि संयुक्त वाक्यों में प्रत्येक वाक्य अपनी स्वतन्त्र सत्ता बनाये रखता है, वह एक-दूसरे पर आश्रित नहीं होता, केवल संयोजक अव्यय उन स्वतन्त्र वाक्यों को मिलाते हैं। इन मुख्य और स्वतन्त्र वाक्यों को व्याकरण में 'समानाधिकरण' उपवाक्य भी कहते हैं।

वाक्य के अनिवार्य तत्व

वाक्य में निम्नलिखित छ: तत्व अनिवार्य हैं -

(1) सार्थकता
(2) योग्यता
(3) आकांक्षा
(4) निकटता
(5) पदक्रम
(6) अन्वय

(1) सार्थकता- वाक्य में सार्थक पदों का प्रयोग होना चाहिए निरर्थक शब्दों के प्रयोग से भावाभिव्यक्ति नहीं हो पाती है। बावजूद इसके कभी-कभी निरर्थक से लगनेवाले पद भी भाव अभिव्यक्ति करने के कारण वाक्यों का गठन कर बैठते है। जैसे-
तुम बहुत बक-बक कर रहे हो।
चुप भी रहोगे या नहीं ?
इस वाक्य में 'बक-बक' निरर्थक-सा लगता है; परन्तु अगले वाक्य से अर्थ समझ में आ जाता है कि क्या कहा जा रहा है।

(2) योग्यता - वाक्यों की पूर्णता के लिए उसके पदों, पात्रों, घटनाओं आदि का उनके अनुकूल ही होना चाहिए। अर्थात: वाक्य लिखते या बोलते समय निम्नलिखित बातों पर निश्चित रूप से ध्यान देना चाहिए-

(a) पद प्रकृति-विरुद्ध नहीं हो : हर एक पद की अपनी प्रकृति (स्वभाव/धर्म) होती है। यदि कोई कहे मैं आग खाता हूँ। हाथी ने दौड़ में घोड़े को पछाड़ दिया।

उक्त वाक्यों में पदों की प्रकृतिगत योग्यता की कमी है। आग खायी नहीं जाती। हाथी घोड़े से तेज नहीं दौड़ सकता।

इसी जगह पर यदि कहा जाय-
मैं आम खाता हूँ।
घोड़े ने दौड़ में हाथी को पछाड़ दिया।
तो दोनों वाक्यों में योग्यता आ जाती है।

oliveboard
100+ FREE Mock Tests
• Full-Length Mock Tests
• Sectional tests
• Topic tests
• GK tests
Register Now
For Bank, Insurance, SSC & Railway Exams

(b) बात-समाज, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि विरुद्ध न हो : वाक्य की बातें समाज, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि सम्मत होनी चाहिए; ऐसा नहीं कि जो बात हम कह रहे हैं, वह इतिहास आदि विरुद्ध है। जैसे-
दानवीर कर्ण द्वारका के राजा थे।
महाभारत 25 दिन तक चला।
भारत के उत्तर में श्रीलंका है।
ऑक्सीजन और हाइड्रोजन के परमाणु परस्पर मिलकर कार्बनडाई ऑक्साइड बनाते हैं।

इसी वाक्य को यदि इस प्रकार कहा जाता-

कृष्ण द्वारका के राजा थे

महाभारत 18 दिनों तक चला

भारत के दक्षिण में श्रीलंका है

(3) आकांक्षा- आकांक्षा का अर्थ है- इच्छा। एक पद को सुनने के बाद दूसरे पद को जानने की इच्छा ही 'आकांक्षा' है। यदि वाक्य में आकांक्षा शेष रहा जाती है तो उसे अधूरा वाक्य माना जाता है; क्योंकि उससे अर्थ पूर्ण रूप से अभिव्यक्त नहीं हो पाता है। जैसे- यदि कहा जाय।

'कहा जाय' तो स्पष्ट नहीं हो पा रहा है कि क्या कहा जा रहा है- किसी के भोजन करने की बात कही जा रही है या Bank के खाते के बारे में?

(4) निकटता- बोलते तथा लिखते समय वाक्य के शब्दों में परस्पर निकटता का होना बहुत आवश्यक है, रूक-रूक कर बोले या लिखे गए शब्द वाक्य नहीं बनाते। अतः वाक्य के पद निरंतर प्रवाह में पास-पास बोले या लिखे जाने चाहिए।

जैसे- गंगा..... पश्चिम
से ..... पूरब
की ओर बहती है।

गंगा पश्चिम से पूरब की ओर बहती है।

घेरे के अन्दर पदों के बीच की दूरी और समयान्तराल असमान होने के कारण वे अर्थ-ग्रहण खो देते हैं; जबकि नीचे उन्हीं पदों को समान दूरी और प्रवाह में रखने के कारण वे पूर्ण अर्थ दे रहे हैं।
अतएव, वाक्य को स्वाभाविक एवं आवश्यक बलाघात आदि के साथ बोलना पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है।

(5) पदक्रम - वाक्य में पदों का एक निश्चित क्रम होना चाहिए। 'सुहावनी है रात होती चाँदनी' इसमें पदों का क्रम व्यवस्थित न होने से इसे वाक्य नहीं मानेंगे। इसे इस प्रकार होना चाहिए- 'चाँदनी रात सुहावनी होती है'।

(6) अन्वय - अन्वय का अर्थ है- मेल। वाक्य में लिंग, वचन, पुरुष, काल, कारक आदि का क्रिया के साथ ठीक-ठीक मेल होना चाहिए; जैसे- 'बालक और बालिकाएँ गई', इसमें कर्ता क्रिया अन्वय ठीक नहीं है। अतः शुद्ध वाक्य होगा 'बालक और बालिकाएँ गए'।

वाक्य परिवर्तन

किसी वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य में, बिना अर्थ बदले, परिवर्तित करने की प्रकिया को 'वाक्य परिवर्तन' कहते हैं।

अर्थ में परिवर्तन लाए बिना वाक्य की रचना में परिवर्तन किया जा सकता है। सरल वाक्यों से संयुक्त अथवा मिश्र वाक्य बनाए जा सकते हैं। इसी प्रकार संयुक्त अथवा मिश्र वाक्यों को सरल वाक्यों में बदला जा सकता है। ध्यान रखिए कि इस परिवर्तन के कारण कुछ शब्द, योजक चिह्न या संबंधबोधक लगाने या हटाने पड़ सकते हैं।

(क) क्रम (order)

किसी वाक्य के सार्थक शब्दों को यथास्थान रखने की क्रिया को 'क्रम' अथवा 'पदक्रम' कहते हैं। इसके कुछ सामान्य नियम इस प्रकार हैं-

(i) हिंदी वाक्य के आरम्भ में कर्ता, मध्य में कर्म और अन्त में क्रिया होनी चाहिए। जैसे- मोहन ने भोजन किया।
यहाँ कर्ता 'मोहन', कर्म 'भोजन' और अन्त में क्रिया 'क्रिया' है।

(ii) उद्देश्य या कर्ता के विस्तार को कर्ता के पहले और विधेय या क्रिया के विस्तार को विधेय के पहले रखना चाहिए। जैसे- अच्छे लड़के धीरे-धीरे पढ़ते हैं।

(iii) कर्ता और कर्म के बीच अधिकरण, अपादान, सम्प्रदान और करण कारक क्रमशः आते हैं। जैसे- मुरारि ने घर में (अधिकरण) आलमारी से (अपादान) श्याम के लिए (सम्प्रदान) हाथ से (करण) पुस्तक निकाली।

(iv) सम्बोधन आरम्भ में आता है।
जैसे- हे प्रभु! मुझपर दया करें।

(v) विशेषण विशेष्य या संज्ञा के पहले आता है।
जैसे- मेरी उजली कमीज कहीं खो गयी।

(vi) क्रियाविशेषण क्रिया के पहले आता है।
जैसे- वह तेज दौड़ता है।

(vii) प्रश्नवाचक पद या शब्द उसी संज्ञा के पहले रखा जाता है, जिसके बारे में कुछ पूछा जाय।
जैसे- क्या मोहन सो रहा है?

(ख) अन्वय (मेल)

'अन्वय' में लिंग, वचन, पुरुष और काल के अनुसार वाक्य के विभिन्न पदों (शब्दों) का एक-दूसरे से सम्बन्ध या मेल दिखाया जाता है। यह मेल कर्ता और क्रिया का, कर्म और क्रिया का तथा संज्ञा और सर्वनाम का होता हैं।

कर्ता और क्रिया का मेल

(i) यदि कर्तृवाचक वाक्य में कर्ता विभक्तिरहित है, तो उसकी क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होंगे।
जैसे- करीम किताब पढ़ता है।
सोहन मिठाई खाता है।
रीता घर जाती है।

(ii) यदि वाक्य में एक ही लिंग, वचन और पुरुष के अनेक विभक्तिरहित कर्ता हों और अन्तिम कर्ता के पहले 'और' संयोजक आया हो, तो इन कर्ताओं की क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में होगी।
जैसे- मोहन और सोहन सोते हैं।
आशा, उषा और पूर्णिमा स्कूल जाती हैं।

(iii) यदि वाक्य में दो भिन्न लिंगों के कर्ता हों और दोनों द्वन्द्वसमास के अनुसार प्रयुक्त हों तो उनकी क्रिया पुंलिंग बहुवचन में होगी।
जैसे- नर-नारी गये।
राजा-रानी आये।
स्त्री-पुरुष मिले।
माता-पिता बैठे हैं।

(iv) यदि वाक्य में दो भिन्न-भिन्न विभक्तिरहित एकवचन कर्ता हों और दोनों के बीच 'और' संयोजक आये, तो उनकी क्रिया पुलिंग और बहुवचन में होगी।
जैसे- राधा और कृष्ण रास रचते हैं।
बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पीते हैं।

(v) यदि वाक्य में दोनों लिंगों और वचनों के अनेक कर्ता हों, तो क्रिया बहुवचन में होगी और उनका लिंग अन्तिम कर्ता के अनुसार होगा।
जैसे- एक लड़का, दो बूढ़े और अनेक लड़कियाँ आती हैं।
एक बकरी, दो गायें और बहुत-से बैल मैदान में चरते हैं।

(vi) यदि वाक्य में अनेक कर्ताओं के बीच विभाजक समुच्चयबोधक अव्यय 'या' अथवा 'वा' रहे तो क्रिया अन्तिम कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार होगी।
जैसे- घनश्याम की पाँच दरियाँ वा एक कम्बल बिकेगा।
हरि का एक कम्बल या पाँच दरियाँ बिकेंगी।
मोहन का बैल या सोहन की गायें बिकेंगी।

(vii) यदि उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष और अन्यपुरुष एक वाक्य में कर्ता बनकर आयें तो क्रिया उत्तमपुरुष के अनुसार होगी।
जैसे- वह और हम जायेंगे।
हरि, तुम और हम सिनेमा देखने चलेंगे।
वह, आप और मैं चलूँगा।
गुरूजी का मत है कि वाक्य में पहले मध्यमपुरुष प्रयुक्त होता है, उसके बाद अन्यपुरुष और अन्त में उत्तमपुरुष।
जैसे- तुम, वह और मैं जाऊँगा।

कर्म और क्रिया का मेल

(i) यदि वाक्य में कर्ता 'ने' विभक्ति से युक्त हो और कर्म की 'को' विभक्ति न हो, तो उसकी क्रिया कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होगी।
जैसे- आशा ने पुस्तक पढ़ी।
हमने लड़ाई जीती।
उसने गाली दी। मैंने रूपये दिये।
तुमने क्षमा माँगी।

(ii) यदि कर्ता और कर्म दोनों विभक्तिचिह्नों से युक्त हों, तो क्रिया सदा एकवचन पुंलिंग और अन्यपुरुष में होगी।
जैसे- मैंने कृष्ण को बुलाया।
तुमने उसे देखा।
स्त्रियों ने पुरुषों को ध्यान से देखा।

oliveboard 100+ FREE Mock Tests
• Full-Length Mock Tests
• Sectional tests
• Topic tests
• GK tests
Register Now
For Bank, Insurance, SSC & Railway Exams

(iii) यदि कर्ता 'को' प्रत्यय से युक्त हो और कर्म के स्थान पर कोई क्रियार्थक संज्ञा आए तो क्रिया सदा पुंलिंग, एकवचन और अन्यपुरुष में होगी।
जैसे- तुम्हें (तुमको) पुस्तक पढ़ना नहीं आता।
अलका को रसोई बनाना नहीं आता।
उसे (उसको) समझकर बात करना नहीं आता।

(iv) यदि एक ही लिंग-वचन के अनेक प्राणिवाचक विभक्तिरहित कर्म एक साथ आएँ, तो क्रिया उसी लिंग में बहुवचन में होगी।
जैसे- श्याम ने बैल और घोड़ा मोल लिए।
तुमने गाय और भैंस मोल ली।

(v) यदि एक ही लिंग-वचन के अनेक प्राणिवाचक-अप्राणिवाचक अप्रत्यय कर्म एक साथ एकवचन में आयें, तो क्रिया भी एकवचन में होगी।
जैसे- मैंने एक गाय और एक भैंस खरीदी।
सोहन ने एक पुस्तक और एक कलम खरीदी।
मोहन ने एक घोड़ा और एक हाथी बेचा।

(vi) यदि वाक्य में भिन्न-भिन्न लिंग के अनेक प्रत्यय कर्म आयें और वे 'और' से जुड़े हों, तो क्रिया अन्तिम कर्म के लिंग और वचन में होगी।
जैसे- मैंने मिठाई और पापड़ खाये।
उसने दूध और रोटी खिलाई।

संज्ञा और सर्वनाम का मेल

(i) सर्वनाम में उसी संज्ञा के लिंग और वचन होते हैं, जिसके बदले वह आता है; परन्तु कारकों में भेद रहता है।
जैसे- प्रखर ने कहा कि मैं जाऊँगा।
शीला ने कहा कि मैं यहीं रूकूँगी।

(ii) संपादक, ग्रंथकार, किसी सभा का प्रतिनिधि और बड़े-बड़े अधिकारी अपने लिए 'मैं' की जगह 'हम' का प्रयोग करते हैं।
जैसे- हमने पहले अंक में ऐसा कहा था।
हम अपने राज्य की सड़कों को स्वच्छ रखेंगे।

(iii) एक प्रसंग में किसी एक संज्ञा के बदले पहली बार जिस वचन में सर्वनाम का प्रयोग करे, आगे के लिए भी वही वचन रखना उचित है।
जैसे- अंकित ने संजय से कहा कि मैं **तुझे कभी** परेशान नहीं करूँगा।

तुमने हमारी पुस्तक लौटा दी हैं।
मैं तुमसे बहुत नाराज नहीं हूँ। **(अशुद्ध वाक्य है।)**

पहली बार अंकित के लिए 'मैं' का और संजय के लिए 'तू' का प्रयोग हुआ है तो अगली बार भी 'तुमने' की जगह 'तूने', 'हमारी' की जगह 'मेरी' और 'तुमसे' की जगह 'तुझसे' का प्रयोग होना चाहिए : अंकित ने संजय से कहा कि मैं तुझे कभी परेशान नहीं करूँगा। तूने मेरी पुस्तक लौटा दी है। मैं तुझसे बहुत नाराज नहीं हूँ। **(शुद्ध वाक्य)**

(iv) संज्ञाओं के बदले का एक सर्वनाम वही लिंग और वचन लेगा जो उनके समूह से समझे जाएँगे।
जैसे- शरद और संदीप खेलने गए हैं; परन्तु वे शीघ्र ही आएँगे।
श्रोताओं ने जो उत्साह और आनंद प्रकट किया उसका वर्णन नहीं हो सकता।

(v) 'तू' का प्रयोग अनादर और प्यार के लिए होता है।
जैसे- रे नृप बालक, कालबस बोलत तोहि न संभार।
धनुही सम त्रिपुरारिधनु विदित सकल संसार।। **(गोस्वामी तुलसीदास)**

तोहि- तुझसे
अरे मूर्ख ! तू यह क्या कर रहा है ?(अनादर के लिए)
अरे बेटा, तू मुझसे क्यों रूठा है ? (प्यार के लिए)
तू धार है नदिया की, मैं तेरा किनारा हूँ।

(vi) मध्यम पुरुष में सार्वनामिक शब्द की अपेक्षा अधिक आदर सूचित करने लिए किसी संज्ञा के बदले ये प्रयुक्त होते हैं-
(a) पुरुषों के लिए: महाशय, महोदय, श्रीमान्, महानुभाव, हुजूर, हुजुरवाला, साहब, जनाब इत्यादि।
(b) स्त्रियों के लिए: श्रीमती, महाशया, महोदया, देवी, बीबीजी आदि।

(vii) आदरार्थ अन्य पुरुष में 'आप' के बदले ये शब्द आते हैं-
(a) पुरुषों के लिए: श्रीमान्, मान्यवर, हुजूर आदि।
(b) स्त्रियों के लिए: श्रीमती, देवी आदि।

संबंध और संबंधी में मेल

(1) संबंध के चिह्न में वही लिंग-वचन होते हैं, जो संबंधी के।
जैसे- रामू का घर, श्यामू की बकरी

(2) यदि संबंधी में कई संज्ञाएँ बिना समास के आए तो संबंध का चिह्न उस संज्ञा के अनुसार होगा, जिसके पहले वह रहेगा।
जैसे- मेरी माता और पिता जीवित हैं। (बिना समास के)
मेरे माता-पिता जीवित है। (समास होने पर)

(ग) वाक्यगत प्रयोग

वाक्य का सारा सौन्दर्य पदों अथवा शब्दों के समुचित प्रयोग पर आश्रित है। पदों के स्वरूप और औचित्य पर ध्यान रखे बिना शिष्ट और सुन्दर वाक्यों की रचना नहीं होती।

(1) 'प्रत्येक', 'किसी', 'कोई' का प्रयोग- ये सदा एकवचन में प्रयुक्त होते है, बहुवचन में प्रयोग अशुद्ध है। जैसे-
प्रत्येक- प्रत्येक व्यक्ति जीना चाहता है।
प्रत्येक पुरुष से मेरा निवेदन है।
कोई- मैंने अब तक कोई काम नहीं किया।
कोई ऐसा भी कह सकता है।
किसी- किसी व्यक्ति का वश नहीं चलता।
किसी का ऐसा कहना है।
किसी ने कहा था।

टिप्पणी- 'कोई' और 'किसी' के साथ 'भी' का प्रयोग अशुद्ध है। जैसे- कोई भी होगा, तब काम चल जायेगा। यहाँ 'भी' अनावश्यक है। कोई 'कोऽपि' का तद्भव है। 'कोई' और 'किसी' में 'भी' का भाव वर्त्तमान है।

(2) 'द्वारा' का प्रयोग- किसी व्यक्ति के माध्यम (through) से जब कोई काम होता है, तब संज्ञा के बाद 'द्वारा' का प्रयोग होता है; वस्तु (संज्ञा) के बाद 'से' लगता है। जैसे-
सुरेश द्वारा यह कार्य संपन्न हुआ। युद्ध से देश पर संकट छाता है।

(3) 'सब' और 'लोग' का प्रयोग- सामान्यतः दोनों बहुवचन हैं। पर कभी-कभी 'सब' का समुच्चय-रूप में एकवचन में भी प्रयोग होता है। जैसे-
तुम्हारा सब काम गलत होता है।
यदि काम की अधिकता का बोध हो तो 'सब' का प्रयोग बहुवचन में होगा। जैसे-
सब यही कहते हैं।
हिंदी में 'सब' समुच्चय और संख्या- दोनों का बोध कराता है।
'लोग' सदा बहुवचन में प्रयुक्त होता है। जैसे-
लोग अन्धे नहीं हैं। लोग ठीक ही कहते हैं।

कभी-कभी 'सब लोग' का प्रयोग बहुवचन में होता है। 'लोग' कहने से कुछ व्यक्तियों का और 'सब लोग' कहने से अनगिनत और अधिक व्यक्तियों का बोध होता है। जैसे-
सब लोगों का ऐसा विचार है। सब लोग कहते हैं कि गाँधीजी महापुरुष थे।

(4) व्यक्तिवाचक संज्ञा और क्रिया का मेल- यदि व्यक्तिवाचक संज्ञा कर्ता है, तो उसके लिंग और वचन के अनुसार क्रिया के लिंग और वचन होंगे। जैसे-
काशी सदा भारतीय संस्कृति का केन्द्र रही है।
यहाँ कर्ता स्त्रीलिंग है।
पहले कलकत्ता भारत की राजधानी था।
यहाँ कर्ता पुंलिंग है।
उसका ज्ञान ही उसकी पूँजी था।
यहाँ कर्ता पुंलिंग है।

(5) समयसूचक समुच्चय का प्रयोग- "तीन बजे हैं। आठ बजे हैं।" इन वाक्यों में तीन और आठ बजने का बोध समुच्चय में हुआ है।

(6) 'पर' और 'ऊपर' का प्रयोग- 'ऊपर' और 'पर' व्यक्ति और वस्तु दोनों के साथ प्रयुक्त होते हैं। किन्तु 'पर' सामान्य ऊँचाई का और 'ऊपर' विशेष ऊँचाई का बोधक है। जैसे-
पहाड़ के ऊपर एक मन्दिर है। इस विभाग में मैं सबसे ऊपर हूँ।
हिंदी में 'ऊपर' की अपेक्षा 'पर' का व्यवहार अधिक होता है। जैसे-
मुझपर कृपा करो। छत पर लोग बैठे हैं। गोप पर अभियोग है। मुझपर तुम्हारे एहसान हैं।

(7) 'बाद' और 'पीछे' का प्रयोग- यदि काल का अन्तर बताना हो, तो 'बाद' का और यदि स्थान का अन्तर सूचित करना हो, तो 'पीछे' का प्रयोग होता है। जैसे-
उसके बाद वह आया- काल का अन्तर।
मेरे बाद इसका नम्बर आया- काल का अन्तर।
गाड़ी पीछे रह गयी- स्थान का अन्तर।
मैं उससे बहुत पीछे हूँ- स्थान का अन्तर।

(8) (क) नए, नये, नई, नयी का शुद्ध प्रयोग- जिस शब्द का अन्तिम वर्ण 'या' है उसका बहुवचन 'ये' होगा। 'नया' मूल शब्द है, इसका बहुवचन 'नये' और स्त्रीलिंग 'नयी' होगा।

(ख) गए, गई, गये, गयी का शुद्ध प्रयोग- मूल शब्द 'गया' है। उपरोक्त नियम के अनुसार 'गया' का बहुवचन 'गये' और स्त्रीलिंग 'गयी' होगा।

oliveboard
100+ FREE Mock Tests
• Full-Length Mock Tests
• Sectional tests
• Topic tests
• GK tests
Register Now
For Bank, Insurance, SSC & Railway Exams

(ग) हुये, हुए, हुयी, हुई का शुद्ध प्रयोग- मूल शब्द 'हुआ' है, एकवचन में। इसका बहुवचन होगा 'हुए'; 'हुये' नहीं 'हुए' का स्त्रीलिंग 'हुई' होगा; 'हुयी' नहीं।

(घ) किए, किये, का शुद्ध प्रयोग- 'किया' मूल शब्द है; इसका बहुवचन 'किये' होगा।

(ड़) लिए, लिये, का शुद्ध प्रयोग- दोनों शुद्ध रूप हैं। किन्तु जहाँ अव्यय व्यवहृत होगा वहाँ 'लिए' आयेगा; जैसे- मेरे लिए उसने जान दी। क्रिया के अर्थ में 'लिये' का प्रयोग होगा; क्योंकि इसका मूल शब्द 'लिया' है।

(च) चाहिये, चाहिए का शुद्ध प्रयोग- 'चाहिए' अव्यय है। अव्यय विकृत नहीं होता। इसलिए 'चाहिए' का प्रयोग शुद्ध है; 'चाहिये' का नहीं। 'इसलिए' के साथ भी ऐसी ही बात है।

इस लेख में हमने आपके LIC सहायक पद के हिंदी परीक्षा से सम्बंधित लगभग 70% हिस्से की तैयारी के लिए सामग्री उपलब्ध कराई है। यदि आप हिंदी भाषा के वाक्य संयोजन को समझ लेते हैं, तो मुख्य परीक्षा में आने वाले उपरोक्त चर्चित उपविषयों में से -

- **गद्यांश आधारित प्रश्न**
- **रिक्त स्थान**
- **वाक्य पुनर्व्यवस्थित करना**
- **दोषपूर्ण वाक्य ज्ञात करना**
- **वाक्य या गद्यांश में संदर्भ के आधार पर अनुचित शब्द ज्ञात करना**
- **शब्द प्रतिस्थापन**

इन सभी विषयों को बेहतरीन ढंग से समझ लेंगे तथा हिंदी के माध्यम से अच्छे अंक प्राप्त करने में सफल रहेंगे, परन्तु भाषा में पारंगत होने के लिए और परीक्षा के व्यवहारिक पक्ष से परिचित होने हेतु ओलिवबोर्ड के **एल.आई सी असिस्टेंट (सहायक) की मॉक परीक्षा** अवश्य दें।

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ और अनेकार्थी शब्दों के अधिक से अधिक उदाहरण पढ़ें और उनके अर्थों का अभ्यास करें| यदि आपने शब्दों के अर्थ समझ लिए तो विपरीतार्थी शब्दों के लिए भी आपको अधिक चिंतन करने की आवश्यकता नहीं है विकल्पों में से उचित शब्द आप स्वत: समझ जायेंगे।

इन विषयों को रेखांकित करते हुए एक अन्य लेख के साथ हम जल्द ही आपसे रूबरू होंगे तब तक के लिए जुड़े रहें ओलिवबोर्ड से।

FREE Ebooks

Download Now

Current Affairs

Explore Now

FREE MOCK TESTS + TOPIC TESTS + SECTIONAL TESTS

For Banking, Insurance, SSC & Railways Exams

Web

APP

BLOG

Your one-stop destination for all exam related information & preparation resources.

Explore Now

FORUM

Interact with peers & experts, exchange scores & improve your preparation.

Explore Now